Name of Research Scholar : Ramesh Chand
Supervisor : Prof. Durga Prasad Gupta
Department : Department of Hindi, Jamia Millia Islamia
Tital of the Thesis : Janvadi Katha Sahitya Mein Nimnavargiya Samaj Ka Adhyayan

ABSTRACT

जनवादी कथाकारों ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से जनता में परिवर्तनकारी चेतना उत्पन्न करने का प्रयास किया है। जनवादी कथा साहित्य मानव समाज पर केंद्रित साहित्य है। यही कारण है कि इस कथा साहित्य में मानव जीवन से संबंधित ढेरों यथार्थ बिम्ब और जीवन–स्थितियाँ उभरकर सामने आती हैं। जनवादी कथाकारों का मूल उद्देश्य निम्नवर्गीय समाज की जीवन–शैली, उनके जीवन की विसंगतियों और विडंबनाओं को चित्रित करने में तनिक भी संकोच नहीं किया है। निम्नवर्गीय समाज के व्यक्तियों के कार्यों की भिन्नता, उसकी चेतना, जीवन–स्तर, रूचि, व्यवहार, भावना और आर्थिक असामानता के साथ–साथ उनके जीवन में उत्पादन और वितरण के साधनों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। समाज में वर्गों की अवधारणा व्यक्तियों के समूहों के सामाजिक और आर्थिक अन्तर के आधार पर निर्धारित होती है। आर्थिक दृष्टि से भारतीय समाज की वर्गीय संरचना में तीन वर्ग हैं–उच्च, मध्य और निम्न। इनमें उच्च वर्ग तथा निम्नवर्ग में क्रमशः शोषक अर्थात् पूँजीपति और श्रमिक का संबंध है। आर्थिक दृष्टि से उच्चवर्ग अपेक्षाकृत अधिक सम्पन्न होता है क्योंकि अधिकांशतः उत्पादन के साधनों पर उच्चवर्ग का ही अधिकार होता है। इसी पूँजी के बल पर वह निम्नवर्ग का शोषण करता है क्योंकि आर्थिक दृष्टि से निम्नवर्ग जीवन भर उच्चवर्ग पर ही आश्रित रहता है।

जनवादी कथा–साहित्य, हिन्दी समाज के बदलते और विकासमान स्वरूप चित्रित का करने में हर संभव प्रयास करता है। स्वतंत्रता के पश्चात भी हिंदी समाज की समस्याएँ कम हाने की बजाय बढ़ी ही हैं। जनवादी कथा–साहित्य में उन तमाम स्थितियों–परिस्थितियों का बखूबी चित्रण करता है जिसमें हिंदी समाज फँसा हुआ है। हिंदी समाज के इन समस्त जीवन–मूल्यों, अन्तर्विरोधों और द्वंद्वों को पहचान कर जनवादी कथाकारों ने अपने साहित्य में बड़ी ही संवेदनात्मकता के साथ उन्हें उजागर किया है। जनवादी कथा–साहित्य में आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक टकरावों को स्पष्ट देखा जा सकता है। जनवादी कथाकार इन समस्त मुद्दों पर प्रभावशाली तरीके

से हस्तक्षेप करते हैं और सही दिशा–निर्देश की ओर इंगित करते हैं। जनवादी कथा–साहित्य में निम्नवर्ग की पीड़ा, त्रासदी और विडम्बना अभिव्यक्त हुई है, जो विशेष रूप से हिन्दी समाज के दायरे मे आते हैं। जहाँ ग्रामीण समाज अनेक प्रकार की समस्याओं–परम्परागत रूढ़ियों, जर्जर होते रीति–रिवाज़ों, खंड़ित जीवन–मूल्यों, जड़ अंधविश्वासों और संस्कारों में जकड़ा हुआ है वहीं शहरी निम्नवर्गीय समाज भी उन परम्परागत मूल्यों से बच नहीं पाया है। शहरी निम्नवर्गीय समाज का एक बहुत बड़ा हिस्सा परिजीवी है जो पूँजीपतियों पर आश्रित रहता है। इस तरह के परजीवी पात्रों को भी जनवादी कहानीकारों ने अपनी कहानियों में चित्रित किया है।

जनवादी कथाकारों की भाषा व्यर्थ शब्द–जाल, उलझाल, भटकाव, बनावटीपन एवं कृत्रिमता में न पड़कर सीधे निम्नवर्गीय समाज के जीवन–संघर्षों को सहजता और सरलता से अभिव्यक्त करती है। जनवादी कथाकारों ने आंचलिक भाषा का प्रयोग कर कथा–भाषा की घिसी–पिटी जड़ता को तोड़ा है और साथ ही एक नया प्रयोग करके कथा–भाषा को समृद्ध किया है, लोकगीतों, लोक–कथाओं, लोक–कहावतों तथा मुहावरों के माध्यम से अपनी कथा–भाषा को अर्थवत्ता और भावात्मक संवेदना प्रदान की है।

अतः जनवादी कथा साहित्य यथार्थ को नए ढंग से प्रतिबिंबित करता है साथ ही वह अतीतोन्मुखी प्रवृत्ति का खंडन करता है। यही कारण है कि यह साहित्य शोषित निम्नवर्गीय समाज में नई जनवादी क्रांति का पक्षधर है। गौरतलब है कि जनवादी कथा साहित्य, किसान–मज़दूर, औद्योगिक मज़दूर के जीवन संघर्ष के चित्रिण के साथ ही शोषक वर्गों और सरकारी तंत्रों के विरूद्ध निम्नवर्गीय संमाज के संघर्ष को अभिव्यक्त करता है। इतना ही नहीं यह साहित्य जनवादी मूल्यों की स्थापना हेतु पुरजोर वकालत करता है। जनवादी कथा–साहित्य में समस्त मानव कल्याण का मूल बीज छिपा हुआ है।